Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, FEB-MAR, 2022, VOL-10/50

हिन्दी आलोचना के आधार शुक्ल: एक परिशीलन

सौ. सरिता मनोहरराव डोंगरे
सहशिक्षिका सौ. मंजुळाबाई हायस्कूल खतगाव.

Paper Received On: 25 MAR 2022
Peer Reviewed On: 31 MAR 2022
Published On: 1 APR 2022

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

हिंदी साहित्य के इतिहास में रामचंद्र शुक्लजी का नाम अग्रणी हैं। इन्होंने सपूर्ण जीवन साहित्य के प्रति समर्पित किया। हिन्दी साहित्य को विश्व स्तरीय पहचान दिलाई। - उन्होंने अपना आरंभिक साहित्य जीवन काव्य रचना से प्रारम्भ किया, तत्पश्चात गद्य विधा के क्षेत्र में आयाधिक कार्य कर अपनी पहचान बनाई। संपादक, आलोचक, निबंधकार तथा अनुवादक के रूप में ख्याति प्राप्त की। शुक्ल जी हिंदी साहित्य के युग प्रवर्तक आलोचक के रूप में विख्यात हैं।

आचार्य शुक्ल की समीक्षा पद्धति

हिन्दी समीक्षा के क्षेत्र में आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल सर्वश्रेष्ठ रसग्राही आलोचक के रूप में हमारे सामने आते हैं। इस क्षेत्र में हमें उनके द्वितीय व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं उन्होंने सैद्धान्तिक आलोचना के मापदंड स्थिर किये और महत्त्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ व्यावहारिक आलोचनाएँ प्रस्तुत की। इस प्रकार उन्होंने सैद्धान्तिक भोर व्यावहारिक दोनों प्रकार की समालोचना के क्षेत्र में मौलिक योगदान दिया। प्राचार्य शुक्ल वस्तुतः वर्तमान युग के उन भारतीय समीक्षकों में अग्रणी हैं, जिन्होंने हिन्दी समीक्षा को व्यापक, वैज्ञानिक एवं सर्वांगीण रूप प्रदान किया।

शुक्लजी की समीक्षा पद्धति पर विचार करते समय हम दो बातों पर विचार करेंगे

(क) शुक्लजी की आलोचना शैली ।

(ख) शुक्लजी की समीक्षा पद्धति की विशेषताएँ ।

(क) शुक्लजी की आलोचना शैली – शुक्लजी ने मुख्यता व्याख्यात्मक आलोचना प्रणाली का व्यवहार किया है। व्याख्या-विवेचन के अन्तर्गत ऐतिहासिक श्रोर तुलनात्मक पद्धतियाँ भी आ गई है। कहीं-कहीं निर्णयात्मक आलोचना का भी प्रयोग मिल जाता है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

इस प्रकार उनकी आलोचना-पद्धति प्रायः चार प्रकार की है-व्याख्यात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक तथा निर्णयात्मक उनके विशिष्ट प्रकार के हास्य एवं व्यंग्य के कारण कतिपय विद्वानों ने व्यंग्यात्मक पद्धति का भी उल्लेख किया है। हम उसका कोई विशेष महत्व नहीं समझते हैं। यह उनकी शैली की एक विशेषता हो सकती है-- पृथक समीक्षा पद्धति नहीं।

(१) व्याख्यात्मक आलोचन पद्धति - मूल रूप में शुक्लजी को आलोचना का यही रूप ग्राह्य है। उनकी जायसी, सूर ओर तुलसी सम्बन्धी आलोचनाओ में हमें व्याख्यात्मक या विवेचनात्मक आलोचना-पद्धति दिखाई देती है। इन समालोचनाओं में उन्होंने गुण-दोष पर समान दृष्टि रखी है।

(२) ऐतिहासिक आलोचना-पद्धति- अधिकांश आलोचनाओं में शुक्लजी ने ऐतिहासिक परिस्थितियों को स्पष्ट करने की चेष्टा की है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उन्होंने साहित्यकार की विशेषताओं एवं उसके महत्व निर्धारण का प्रयत्न किया है। 'तुलसी की भक्ति पद्धति' शीर्षक समालोचना इस पद्धति का अच्छा उदाहरण है। इसमें उन्होंने वीरगाथा काल के बाद की भारतीय परि स्थितियों का उद्‌घाटन करके भक्ति-आन्दोलन का स्वरूप स्पष्ट किया है। शिवनाथ के शब्दों में –"इस ऐतिहासिक परिस्थिति के अन्तर्गत वे युद्ध इतिहास, साहित्य के इतिहास, तत्कालीन समाज-धर्म आदि का स्पष्टीकरण करते हैं।"

१. (क) उनके विचार से व्याख्यात्मक आलोचना के लिए विस्तृत अध्ययन, सूक्ष्म अन्वीक्षण-बुद्धि और मर्मग्राहिणी प्रज्ञा अपेक्षित है।

(ख) उनके विचार से निर्णयात्मक आलोचना व्याख्या विश्लेषण में स्वतः समाहित हो जाती है। "सम्य और शिक्षित समाज में निर्णयात्मक आलोचना का व्यवहार-पक्ष भी है। उसके द्वारा साधन-हीन अनधिकारियों को यदि कुछ रोक-टोक न रहे, तो साहित्य क्षेत्र कूड़ा-करकट से भर जाए ।"

(ग) आत्म-प्रधान या प्रभाववादी आलोचना का उन्होंने विरोध किया है। यथा "प्रभावाभिव्यंजक समीक्षा कोई ठीक-ठिकाने की वस्तु नहीं। न ज्ञान के क्षेत्र में उसका कोई मूल्य है, न भाव के क्षेत्र में उसे समीक्षा या आलोचना कहना ही व्यर्थ है।"

(३) तुलनात्मक आलोचना-पद्धति - उन्होंने इस पद्धति का अवलम्बन व्यास्पात्मक आलोचना के साधक रूप में किया है- "तुलनात्मक शैली का ग्रहण विवेच्य विषयों की स्पष्टता के लिए किया है।" पद्मावत की प्रेम-पद्धति को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने फारसी-मसनवियों की प्रेम-पद्धति का भी निर्देश किया है। जायसी और सूर की आलोचना करते समय उन्होंने तुलसी के काव्यादर्श को सदैव सामने रखा है।

(४) निर्णयात्मक आलोचना-पद्धति - व्याख्या विवेचन के मध्य हमें उनके दो टूक निर्णयों के प्रायः दर्शन हो जाते हैं। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में हमें उनकी निर्णयात्मक आलोचना के दर्शन अक्सर हो जाते

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

हैं। उन्होंने प्रायः प्रत्येक कवि का स्थान निर्धारण किया है और यह निर्धारण प्रायः अचूक और सर्व मान्य है।

(ख) आचार्य शुक्ल की समीक्षा-उद्धति को विशेषताएं- आचार्य शुक्ल की समीक्षा पद्धति की विशेषताएँ निम्नलिखित प्रकार हैं

(१) व्याख्या – शुक्लजी ने गुण-दोष पर समान दृष्टि रखते हुए भाव पक्ष घोर कला-पक्ष पर पूरी तरह से विचार किया है।

(२) कवि के व्यक्तित्व का अध्ययन - कवि की परिस्थितियों- ऐतिहासिक परिस्थितियों तथा उसकी अंतरवृतियों की छानबीन करने के पश्चात् ही उन्होंने कवि की आलोचना की है। हिन्दी आलोचना-जगत में इस विशेषता को जन्म देने का श्रेय शुक्लजी को ही प्राप्त है।

(३) शास्त्रीयता- शुक्लजी की आलोचना की सबसे बड़ी विशेषता शास्त्रा-नुसरण है। शुक्लजी ने समीक्षा के निश्चित आघारों पर ही आलोचना लिखी है। व्यक्तिगत रुचि अथवा प्रभावानुभूति की अभिव्यक्ति को उन्होंने आलोचना में कभी महत्वपूर्ण नहीं माना।

शुक्लजी ने भारतीय और पाश्चात्य दोनों काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों के समन्वय द्वारा प्रपती काव्यशास्त्रीय कसोटी तैयार की भोर इस प्रकार सैद्धान्तिक आलोचना के सुनिश्चित मानदण्ड लेकर चले। वास्तव में उनकी व्यावहारिक आलोचना उनकी सैद्धान्तिक आलोचना का व्यवहार या प्रयोग पक्ष है। नन्द दुलारे वाजपेयी ने उनके विषय में ठीक हो लिखा है, "जितना उत्कर्ष शुक्ल जी को साहित्य के सिद्धान्तों का निरूपण करने में प्राप्त हुआ, उतनी ही दक्षता उन्हें उन सिद्धान्तों का व्यावहारिक प्रयोग करने में हासिल हुई है।"

(४) आदर्श-प्रियता- आलोचना के सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण बहुत ही पवित्र था। उनके विचार से समालोचक होने के लिए परिमार्जित रुचि ओर राग-द्वेष से विनिमुक्ति आवश्यक थी। जीवन की पवित्रता आवश्यक थी ।

(५) लोकधर्म या लोकादशवाद की प्रतिष्ठा- शुक्लजी लोक-मंगल की प्रतिष्ठा को काव्य का एक आवश्यक लक्षण या धर्म मानते थे। लोक-पक्ष को साहित्य से पृथक करके देखना उनके लिए प्रायः असम्भव था। सामाजिक लोक-मंगल का सिद्धान्त एक प्रकार से उनकी समस्त आलोचना का मेरुदण्ड ही था तुलसी उनके आदर्श कवि है, क्योंकि उनके काव्य में लोक-मंगल की साधनावस्था की छटा पग-पग पर दिखाई देती है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

(६) उच्चकोटि को रसानुभूति तथा विश्लेषण शक्ति - शुक्लजी रसवादा समीक्षक थे। भावूकता या रसज्ञता उनकी आलोचना की प्रमुख विशेषता है। उनकी उच्चकोटि की रसज्ञता एवं विश्लेषण शक्ति का परिचय हमें उनके द्वारा प्रस्तुत कवियों के भाव-पक्ष के विश्लेषण में मिलता है।

रसानुभूति के विश्लेषण में हमें उनकी भावात्मकता के भी दर्शन हो जाते हैं। जहाँ भी, जिस काव्य में भी, उन्हें रंग-ग्रहण कराने की क्षमता में कमी दिखाई दी, वहीं उन्होंने उसका विरोध किया है। कबीर आादि कवियों की उपेक्षा एवं रीति-कवियों के प्रति उनके विरोध का कारण यही है।

(७) बुद्धि और हृदय का सामंजस्य- उनकी आलोचना में हमें सुलझी हुई विद्या बुद्धि और हृदय की सरसता का सामंजस्य देखने को मिलता है। इसी कारण उनको आलोचना कहीं भी नीरस और बोझिल नहीं हो पाती है। सरसता उनकी आलोचना की बहुत बड़ी विशेषता है। सुर, तुलसी, जायसी की आलोचना में इस विशेषता के दर्शन हमें आद्योपान्त होते हैं। यथा "तुलसी के हृदय से इन दोनों अनुभवों (आालम्बन का महत्व और अपना दैन्य) के ऐसे निर्मल शब्द-स्रोत निकलते हैं, जिनमें अवगाहन करने से मन की मैल कटती है और अत्यन्त पवित्र प्रफुल्लता आती है। इस प्रकार की आलोचना में . शुक्लजी की शैली प्रायः व्याख्यात्मक हो जाती है-'प्रेम का क्षीर-समुद्र अपार और अगाध है जो इस क्षीर-समुद्र को पार करते है वे उसकी प्रभुता के प्रभाव से 'जीव संज्ञा को त्याग शुद्ध प्रात्मस्वरूप को प्राप्त हो जाते हैं जो एहि खीर-समुद्र महं परे। जीव गंवाहर हंस होइ तरे।" फिर तो वे "बहुरि न भाइ मिलिहि एहि द्वारा "

(८) हृदय पक्ष तथा फलापक्ष दोनों पर समान एवं निरपेक्ष बुष्टिकोण - इनके कारण शुक्लजी की आलोचना कहीं भी एक नहीं हो पाई है ओर न उसमें व्यर्थ की प्रशंसा अथवा अनावश्यक निन्दा ही आ पाई है।

(९) मनोभावों का आधार - शुक्ल जी रसवादी आलोचक थे। रस का आघार मनोभाव है। मनोभाव रसशास्त्र की सामग्री है। प्राचार्य शुक्ल की समीक्षा साहित्य के मूल में निहित मनोभाव के आधार पर स्थित है। मानव के मनोवेगों या मनोविकारों का विवेचन करते हुए साहित्य के स्वरूप को स्पष्ट करना शुक्लजी की समीक्षा पद्धति की बहुत बड़ी विशेषता है। सूरदास की आलोचना करते हुए उन्होंने पशु-प्रकृति तक को समाविष्ट कर लिया है।

(१०) हास्य-व्यंग्य का प्रयोग- शुक्लजी बहुत ही गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति थे। परन्तु उनकी आलोचना के मध्य हमें हास्य-व्यंग्य के छोटें प्रायः दिखाई देते हैं। हास्य-व्यंग्य के इस पुट के कारण उनको आलोचनाएँ बड़ी ही सरस हो गई है । हास्य और व्यंग्य के लिए वे प्रायः उर्दू-फारसी के शब्दों का प्रयोग करते हैं। फारसी कवियों की शैली पर विरह-ताप का वर्णन करने वाले रीति-कालीन कवियों के प्रहात्मक वर्णनों पर उन्होंने बड़े ही तीखे व्यंग्य किए हैं। जायसी के विरह-वर्णन की विशेषता दिखाने के लिए उन्होंने बिहारी के

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

विरह-वर्णन की ओर संकेत किया है—"जाड़े के दिनों में भी पड़ोसियों तक पहुंच उन्हें बेचैन करने वाले, शरीर पर रखे हुए कमल के पत्तों को भूनकर पापड़ बना डालने वाले, बोतल का गुलाब-जल सुखा डालने वाले ताप से कम ताप जायसी का नहीं पर उन्होंने उसके वेदनात्मक अंश पर दृष्टि रखी है।

(११) उद्धरणों का प्रयोग - आलोचना में विवेच्य विषय से सम्बन्धित उद्धरणों के प्रयोग द्वारा वे अपने कथन की पुष्टि करते चलते हैं। कवि की विशेषता का उद्‌घाटन करने के साथ वह प्रमाणस्वरूप उसकी कृति का उद्धरण प्रस्तुत कर देते हैं। जायसी और सूर की आलोचनाओं में उन्होंने उद्धरणों को प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है।

(१२) विवाद पर सम्मति प्रकाश एवं विषय-विचारों को टोका - -शुक्ल जी समीक्षा करते समय उस कवि या विषय पर अपनी स्पष्ट सम्मति देते चलते हैं जो विवाद का विषय है। तुलसी के सम्बन्ध में उनका यह कथन देखिए "तुलसी पूर्ण रूप में इसी भारतीय भक्ति-मार्ग के अनुयायी थे, अतः उनकी रचना को रहस्यवाद कहना हिन्दुस्तान को अरब या विलायत कहना है ।" इसी प्रकार आलोचना ओर निबन्ध दोनों में वे संसार में प्रचलित प्रधान विषम विचारों की टीका भी करते चलते हैं। गोस्वामी जी के सोकवाद की चर्चा करते हुए उन्होंने रूसी-लोकवाद को प्रकाण्ड-ताण्डव बताया है।

(१३) समन्वय - भावना - शुक्लजी तुलसी की भाँति समन्वयवादी अलोचक थे। उनकी आलोचना में हमें एक ओर भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्रों का समन्वय दिखाई देता है, तो दूसरी घोर व्याख्यात्मक एवं निर्णया रमक समीक्ष-शैलियों के साथ ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक समीक्षा-शैलियों का समन्वय दिखाई देता है। वे आलोचना के एकांगी एवं प्रभाववादी रूप के विरोधी थे। उनकी आलोचना में हमें बुद्धि और हृदय, विश्लेषण और संश्लेषण, विवेचना और भावूकता, व्यक्ति एवं समाज, भावपक्ष एवं कलापक्ष, धन्त: प्रकृति एवं बाह्य प्रकृति का पूर्ण समन्वय दिखाई देता है।

सारांश ---शुक्लर्जी सूक्ष्म दृष्टि वाले कला के सच्चे पारखी थे। उनकी दृष्टि पैनी ओर पकड़ गहरी थी। वह सहृदय एवं भावुक थे। उनकी आलोचनाओं में विवेचना और रसात्मकता का सुखद संयोग दिखाई देता है। उन्होंने साहित्यकारों एवं उनकी कृतियों के विषय में जो निर्णय दिए, वे बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं और आजतक उसी रूप में मान्य हैं। उनकी आलोचक प्रतिभा व्यापक, सारग्राही ओर निर्णायक थी। उनके परवर्ती युग के अधिकांश समालोचक शुक्ल-परम्परा के ही आलोचक हैं ।

संदर्भ

डॉ. राजकुमार वर्मा– हिंदी साहित्य का अलोचनात्मक इतिहास- प्रकाशन-१९३८
डॉ. रामचंद्र शुक्लजी– हिंदी साहित्य का इतिहास कला– मंदिर
डॉ. रामचंद्र शुक्लजी– आलोचना/ त्रिवेणी
डॉ. रामचंद्र शुक्लजी– चिंतामणी बोधी प्रकाशन जयपूर
डॉ. रामविलास शर्मा– आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिन्दी आलोचना राजकमल प्रकाशन २००९
आचार्य रामचंद्र शुक्ल– गोस्वामी तुलसीदास प्रकाशन संस्तान-२०१२

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language